उदाहरण के लिये, जब हम किसी के विवाह के कार्यक्रम में सम्मिलित होते हैं तो बिना किसी सोच-विचार के उत्साह और प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करते हैं। यह अचेतन सामाजिक नियंत्रण है, लेकिन इसके विपरीत किसी ऐसे शोक समारोह में सम्मिलित होते हैं तो हमें बड़ा ही चेतन होकर अपने चेहरे पर शोक की अभिव्यक्ति करनी पड़ती है—मुँह लटकाये रखना पड़ता है, पान जैसे मुखवास को थूक देना पड़ता है और वाणी में खेद और दुःख की अभिव्यक्ति करनी पड़ती है, चाहे इस दुखद घटना से हमारा कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध न हो। इसे हम चेतन सामाजिक नियंत्रण कहते हैं।

(2) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नियंत्रण

कार्ल मैनहीम

(Direct and Indirect Control)

प्रत्यक्ष नियंत्रण वह है, जो व्यक्ति पर अपने निकट के व्यक्तियों द्वारा लागू किया जाता है। निकट के व्यक्तियों में अपने नातेदार, पड़ोसी, सहकर्मी या सहपाठी हो सकते हैं। यह नियंत्रण प्रशंसा, आलोचना, सम्मान या पुरस्कार द्वारा किया जाता है। इन व्यक्तियों का हमारे नियंत्रण पर अधिक प्रभाव इसलिये पड़ता है कि ये हमारे निकट के लोग हैं। यह समझा जाता है कि दुनिया में व्यक्ति को कुछ भी क्यों न कहें, व्यक्ति अधिक परेशान नहीं होता, लेकिन जब उसके ही लोग उसकी निंदा करते हैं तो वह अपने लोगों की ही आँख से गिर जाता है। इससे अधिक अपमानजनक बात उसके लिये और कोई नहीं हो सकती। इसी भाँति यदि अपने ही लोग प्रशंसा करते हैं तो व्यक्ति को अधिक काम करने की प्रेरणा मिलती है। यह प्रत्यक्ष नियंत्रण है।

प्रत्यक्ष नियंत्रण के अतिरिक्त यानी भाई-बंधुओं और सगे-सम्बन्धियों के अतिरिक्त जिन लोगों का व्यक्ति पर नियंत्रण होता है, उस नियंत्रण को अप्रत्यक्ष नियंत्रण कहते हैं। ऐसे नियंत्रण में व्यक्ति के सूक्ष्म से सूक्ष्मतम व्यवहार पर भी अंकुश रहता है। यह नियंत्रण व्यक्ति को एक विशेष प्रकार के व्यवहार करने को बाध्य करता है। शुरू में तो हम बड़े चेतन होकर इस तरह के नियंत्रण को अमल में लाते हैं, पर बाद में चलकर यह नियंत्रण हमारे लिये सामान्य और सहज बन जाता है। अप्रत्यक्ष नियंत्रण में तर्क और जनकल्याण को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(3) सकारात्मक व नकारात्मक नियंत्रण

(Positive and Negative Control)

नियंत्रण का यह प्रकार **किम्बाल यंग** (Kimball Young) ने रखा है। सकारात्मक सामाजिक नियंत्रण का तात्पर्य है व्यक्ति को **प्रतिफल** (Reward) देकर उसे सही व्यवहार करने की प्रेरणा देना है। सकारात्मक नियंत्रण के दृष्टान्त आये दिन हमें समाज में देखने को मिलते हैं। मेधावी छात्र को स्कॉलरशिप मिलती है, अच्छे सिपाही को मैडल मिलता है और अच्छे बच्चों को माता-पिता कई तरह से प्रतिफल देते हैं।

नकारात्मक सामाजिक नियंत्रण में व्यक्ति को दण्ड दिया जाता है, उसकी निंदा होती है और कानून की दृष्टि से यदि व्यवहार सजा के लायक है तो उस पर बल प्रयोग भी किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(4) संगठित, असंगठित और सहज नियंत्रण
(Organized, Unorganized and Automatic Control)

सामाजिक नियंत्रण के ये प्रकार **गुरविच और मूर** (Gurvich and Moore) ने दिये हैं। इन लेखकों का कहना है कि सामाजिक नियंत्रण विभिन्न स्तरों पर देखने को मिलता है। संगठित नियंत्रण वह नियंत्रण है, जो अनेक छोटी-बड़ी एजेंसियों और व्यापक नियमों द्वारा किसी निश्चित ढाँचे के अन्दर व्यवहार को प्रभावित करता है। दूसरी ओर संगठित नियंत्रण से उनका तात्पर्य उस नियंत्रण से है जो बहुत अधिक नियमबद्ध होता है और जिसके कारण व्यक्ति को कुछ अधिकार व कर्त्तव्यों की सुपरिभाषित सीमा मिलती है उसके व्यवहार को नियंत्रित करती रहती है। संगठित नियंत्रण के दृष्टान्त में विवाह, परिवार, स्कूल, दफ्तर द्वारा किये गये नियंत्रण आते हैं। असंगठित नियंत्रण के अन्तर्गत सांस्कृतिक नियम और प्रतीक आते हैं—जैसे संस्कार, परम्पराएँ, रूढ़ियाँ और सामाजिक मानदण्ड। सामाजिक नियंत्रण के ये स्वरूप इतने अधिक सुपरिभाषित नहीं होते—किन्तु फिर भी ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने प्रसार से ही व्यवहार को सबसे अधिक नियंत्रित करते हैं।

सहज नियंत्रण, नियंत्रण का तीसरा स्वरूप है। इस नियंत्रण का आधार व्यक्तियों के अनुभव और उनकी आवश्यकताएँ हैं। "व्यक्ति को किन्हीं कार्यों के करने की प्रेरणा स्वतः मिलती है और वह स्वयं उन्हें करने के तरीके सीखता है। विभिन्न परिस्थितियों की विशिष्टता के अनुसार एक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं व अनुभव के आधार पर उस स्थिति में नियंत्रित व्यवहार करता है। ऐसी स्थितियाँ समाज के कानून व जनरीति अथवा संस्था द्वारा परिभाषित नहीं होतीं।"

(5) औपचारिक और अनौपचारिक नियंत्रण (Formal and Informal Control)

औपचारिक नियंत्रण वह है जो कानून और लिखित दस्तावेजों द्वारा होता है। इसे मानने के लिये दूसरा व्यक्ति बाध्य होता है। यदि वह नहीं माने तो उसके खिलाफ औपचारिक कार्यवाही की जाती है। दुर्खीम ने बहुत पहले कहा था कि सावयवी समाज में व्यक्तियों पर नियंत्रण **संविदा** (Contract) द्वारा होता है। आज के औद्योगिक समाज में जहाँ विवेकशीलता और दफ्तरशाही काम करने के तरीके हैं, औपचारिक नियंत्रण एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है। अनौपचारिक नियंत्रण वह है, जिसका विकास समूह अपने कल्याण के लिये करता है। इसका उल्लंघन करने पर यद्यपि कोई बड़ा या बल प्रयोग द्वारा दण्ड नहीं मिलता, फिर भी बदनामी और अपयश के डर से लोग इससे भयभीत होते हैं। भारत के आदिवासी जेल जाना ठीक समझते हैं पर कभी भी आदिवासी समाज की आलोचना को झेल नहीं सकते। कई बार जेल के दण्ड की तुलना में समाज की आलोचना अधिक गम्भीर होती है। यह अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण की शक्ति है।

सामाजिक नियंत्रण के साधन और अभिकरण
(Means and Agencies of Social Control)

बोटोमोर ने सामाजिक नियंत्रण को दो श्रेणियों में बाँटा है। एक सामाजिक नियंत्रण वह है जिसे वे **स्वरूप या प्रकार** (Forms or Types) में देखते हैं। इनका विवरण हमने पिछले पृष्ठों में

Scanned with CamScanner

दिया है। सामाजिक नियंत्रण का दूसरा पहलू उसके साधन और अभिकरण हैं। यहाँ हम सामाजिक नियंत्रण के इन अभिकरणों व साधनों को देखेंगे :

1. धर्म (Religion)

सामाजिक नियंत्रण उन साधनों द्वारा होता है जो इतिहास के लम्बे काल में विकसित हुए हैं। प्रत्येक समाज में कुछ धार्मिक निर्देश होते हैं और लोग इनका बराबर पालन करते हैं। ये धार्मिक निर्देश पाँच भागों में बाँटे जाते हैं—पहला धार्मिक निर्देश वह है कि प्रकृति में कोई ऐसी शक्ति है जो मनुष्य का व्यवहार बराबर देखती रहती है। यह अदृष्ट शक्ति समाज की परम्पराओं को मानने वालों को पुरस्कृत करती है और परम्परा तोड़ने वालों को दण्ड देती है। निर्देशों का दूसरा समूह हिन्दू समाज में पाये जाने वाला पुनर्जन्म का सिद्धान्त है। आत्मा अमर है और यह हमेशा विभिन्न योनियों में जन्म लेती रहती है। रूढ़िवादी हिन्दू किसी भी काम को करते समय पुनर्जन्म के सिद्धान्त को अवश्य ध्यान में रखता है। तीसरे प्रकार के निर्देश वे हैं, जिनका विश्वास है कि पापी को दण्ड अवश्य मिलता है। भगवान के दरबार में देर है, अँधेर नहीं। पाप यहीं इस दुनिया में है। ऐसे व्यक्ति को समाज समुदाय से बाहर कर देता है। इस प्रकार के दण्ड से व्यक्ति प्रायश्चित्त करता है और अपने व्यवहार को बदल देता है। चौथे प्रकार के निर्देश स्वर्ग और नरक की भावना पर आधारित है। अच्छा व्यवहार करने वाला व्यक्ति स्वर्ग में जाता है और बुरा व्यवहार करने वाला व्यक्ति नरक में। पाँचवें प्रकार के निर्देश वे हैं, जिनमें व्यक्ति सोचता है कि पूर्वज स्वर्ग से उसके व्यवहार को देखते हैं, अगर वे खराब व्यवहार करते हैं तो इससे पूर्वजों की आत्मा को कष्ट होगा।

इन अदृष्ट निर्देशों में विश्वास करना व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करने में बहुत सहयोगी है। अति प्राकृत निर्देश प्रभावपूर्ण होते हैं। औपचारिक नियंत्रण बड़े महँगे हैं। न्यायालय में वर्षों तक झगड़े चलते हैं तब कहीं अपराधी को दण्ड मिलता है। साथ ही यह भी भय रहता है कि अपराधी बच जाये और निरपराधी को दण्ड मिल जाये। पर धार्मिक निर्देश व्यक्ति का आंतरिक नियंत्रण करते हैं। दूसरे जन्म में मेरा क्या होगा? परमात्मा मेरे पापों को क्षमा करें, जैसा करेगा वैसा भरेगा, आदि अभिव्यक्तियाँ हृदय की गहराई से निकली हुई होती हैं। इसलिये सामाजिक नियंत्रण में धार्मिक निर्देश बहुत शक्तिशाली होते हैं।

2. सामाजिक सुझाव (Social Suggestions)

सामाजिक सुझाव हमारे चेतन या अचेतन मस्तिष्क पर बराबर प्रभाव डालते रहते हैं और कई बार इन प्रभावों से प्रेरित होकर हमारे व्यवहार में आत्म संयम आ जाता है। सुझावों में सबसे पहली पद्धति दृष्टान्त की है। हम अपने समाज के महान् और यशस्वी पुरुषों के दृष्टान्त देकर द्रवीभूत हो जाते हैं और अपने व्यवहार में नियंत्रण ले आते हैं। बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के बलिदान हमारी देशभक्ति को जागृत कर देते हैं। गाँधीजी को हम राष्ट्रपिता की तरह आदर्श व्यक्ति के रूप में लेते हैं। वीर पूजा हमारे व्यवहार को इतना अधिक प्रभावित करती है कि कभी-कभी हम जोश में आकर इन वीरों और महान् पुरुषों के पदचिह्नों पर चलने के दुष्परिणामों से भी आँख मूंद लेते हैं।

सुझाव का एक स्रोत उन व्यक्तियों का भी होता है जो चमत्कार उत्पन्न करने में सिद्धहस्त होते हैं और उन पर हम सरलता से विश्वास कर लेते हैं। साधु, महात्मा, आदि को हम ईश्वर

Scanned with CamScanner

का ही एक अवतार समझते हैं और उनकी कही हुई बातों में असम्भव कार्य को भी करने की शक्ति समझकर हम उन्हीं के अनुसार काम करने लग जाते हैं।

सुझाव का एक और स्रोत सिद्धान्तों और आदर्श सूत्रों में भी पाया जाता है। सुझाव विज्ञापन द्वारा भी दिये जाते हैं और यदि ये सुझाव टेलीविजन या रेडियो पर जाने माने लोगों द्वारा दिये जाते हैं तो ऐसे विज्ञापन भी सामाजिक व्यवहार पर नियंत्रण का काम करते हैं। सच में देखा जाये तो आज के **मीडिया समाज** (Media Society) में समाचार-पत्र और टेलीविजन, सुझावों की बौछार-सी कर देते हैं। ये सुझाव ही कम से कम बाजार में तो एक उपभोक्ता समाज को तैयार कर देता है। राजनीतिक विवादों को भी बढ़ा देता है। स्वास्थ्य और सुरक्षा सम्बन्धी विज्ञापन भी सामाजिक नियंत्रण का काम अच्छी तरह कर लेते हैं।

शिक्षा के माध्यम से भी सुझाव दिये जाते हैं। ये सुझाव सर्वाधिक प्रामाणिक होते हैं। कठोर अनुशासन, खेलकूद, आदि छोटे बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं।

बोटोमोर ने रीति-रिवाज, परम्परा और रूढ़ियों को भी सुझाव के प्रकार माने हैं। इनकी व्यक्ति के सामाजिक नियंत्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

3. सामाजिक आदर्श (Social Ideals)

कभी-कभी आदर्शों द्वारा भी सामाजिक नियंत्रण किया जाता है। मार्क्स, लेनिन, स्टालिन आदि ने रूस के नागरिकों में आर्थिक समानता का आदर्श इस भाँति कूट-कूट कर भर दिया कि सोवियत रूस के विघटन के बाद भी वहाँ के लोगों में मार्क्सवाद जीवन सिद्धान्त बन गया है। दूसरे विश्वयुद्ध में जर्मनी के हिटलर ने उत्तम प्रजाति की भावना को लोगों में इतनी भर दी थी कि जर्मनवासी अपने आपको संसार में सर्वोच्च जाति समझने लगे। गाँधीजी ने हमारे देश में भी अहिंसा की भावना को जनमानस में लोकप्रिय बनाने के लिये काफी काम किया।

4. धार्मिक संस्कार (Rituals)

यह ठीक है कि दुनियाभर के समाजों में अब प्रजातन्त्र तथा विज्ञान की पहुँच हो रही है। युक्तायुक्त जीवन आज के समाज का बहुत बड़ा मुहावरा है। यह सब होते हुए भी जीवन के कुछ क्षेत्रों में धार्मिक संस्कारों और उत्सवों का सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। ये संस्कार सामाजिक नियंत्रण का काम करते हैं। हमारे देश में तो जन्म से लेकर मृत्यु तक संस्कारों का सिलसिला बराबर चलता रहता है। इन सभी अवसरों पर इन संस्कारों का नियंत्रण अवश्य होता है। हिन्दुओं में विवाह के अवसर पर एक बहुत बड़ा कर्मकाण्ड होता है। मृत्यु पर भी किसी न किसी तरह का कर्मकाण्ड अवश्य होता है। यदि हम कर्मकाण्ड की फेहरिश्त बनाएँ तो बहुत बड़ी हो जायेगी। खेत की बुवाई हो या गृह-प्रवेश, भवन का शिलान्यास हो या बांध का निर्माण, सभी में धार्मिक संस्कार होते हैं। जीवन के जो बड़े-बड़े मोड़ हैं, और वर्ष के जो बड़े-बड़े त्यौहार हैं, सभी पर धार्मिक संस्कार होते हैं और ये संस्कार समाज को नियंत्रित करते हैं।

5. कला (Art)

कला एक वृहत् अवधारणा है। भारतीय परम्परा में पाँच प्रकार की कलायें मानी

Scanned with CamScanner

गयी हैं—(i) साहित्य कला, (ii) संगीत कला, (iii) मूर्ति कला, (iv) चित्रकला, और (v) भवन निर्माण कला। कविता, चित्र, संगीत, नृत्य आदि व्यक्ति के व्यवहार को अपने अन्दर निहित भावनाओं द्वारा नियंत्रित करते हैं, कहते हैं तानसेन के संगीत को सुनकर आदमी तो क्या, बादल तक रोने लग जाते थे, बुझे दीपक जल जाते थे। युद्ध में जाने वाले सिपाहियों को मारू बाजा सुनाया जाता था। कला द्वारा ही राष्ट्र की सुदृढ़ता, समूह की शक्ति और सम्पूर्ण मनुष्य जाति की शक्ति का अनुमान लगाया जाता है।

6. नेतृत्व (Leadership)

सभी सभाओं में सामाजिक नियंत्रण प्रभावपूर्ण व्यक्तियों द्वारा होता है। पशु समाज में भी किसी न किसी प्रकार का नेतृत्व होता है। प्रजातन्त्र में तो नेता का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

7. बल प्रयोग (Force)

कई बार समाज में नियंत्रण लाने के लिये बल प्रयोग भी किया जाता है। कर्फ्यू लगाना, बल प्रयोग का दृष्टान्त है। सामान्यतया राज्य ऐसे लोगों पर बल प्रयोग करता है जो चोर, डाकू, गुण्डे या बदमाश हैं। राज्य अपना दण्ड-विधान बना लेता है। निर्णय करने के लिये न्यायालय होते हैं और अपराधियों को दण्ड दिया जाता है।

8. कानून और प्रशासन (Law and Administration)

जब लोगों का नियंत्रण रीति-रिवाज और रूढ़ियों द्वारा नहीं किया जा सकता तो राज्य विधान द्वारा उनका नियंत्रण करता है। वर्षों तक लोगों को शराब पीने की हानियाँ बतायी गयीं फिर भी लोग जब नहीं माने तो हमारे देश में कुछ राज्यों ने सामाजिक विधान द्वारा मद्य निषेध किया। संविधान लोगों के मौलिक अधिकारों पर कोई चोट करता है तो राज्य दण्ड देता है। विधान का परिपालन करवाने के लिये राज्य के पास पुलिस की शक्ति होती है।

9. प्रचार और शिक्षा (Propaganda and Education)

शिक्षा और प्रचार द्वारा भी सामाजिक नियंत्रण किया जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नयी पीढ़ी को समाज की वास्तविकता को समझने योग्य बनाना है। प्राथमिक रूप में शिक्षा व्यक्ति का मस्तिष्क देश-विदेश की सूचनाओं से नहीं भरती पर इसका उद्देश्य मनुष्य को सोचने के लिये प्रेरित करना भी है। शिक्षा व्यक्ति को झूठ और सत्य की जाँच करके वास्तविकता पर आने की प्रेरणा देती है। इस पवित्र उद्देश्य द्वारा भी शिक्षा व्यक्ति का नियंत्रण करती है।

10. बौद्धिक कारक (Intellectual Factor)

सामाजिक नियंत्रण का एक और तरीका बौद्धिक कारकों का है। कभी-कभी बुराइयों और कुरीतियों के प्रति लोगों में जागरण पैदा करके नयी महत्त्वाकांक्षाएँ देकर और प्रभावशाली सामाजिक मूल्यों को उभार कर भी सामाजिक नियंत्रण किया जाता है।

यदि हम दुनिया के क्रान्तिकारी सामाजिक नियंत्रण के दृष्टान्तों को देखें तो ज्ञात होगा कि धार्मिक सुधार आन्दोलन, फ्रांस की राज्य क्रान्ति या भारत की आजादी की लड़ाई के लिये

Scanned with CamScanner